बच्चों की नई किताबें

पल्लव

साहित्य की दुनिया में बच्चों की किताबों का जिक्र बहुत ज्यादा नहीं होता। कुछ सरकारी पत्रिकाएं बाल दिवस के महीने में अपना बाल साहित्य विशेषांक निकाल देती हैं जिसमें सालों-साल वही बाल साहित्यकार बच्चों में नैतिकता और संस्कृति की गिरावट को लेकर चिंता करते दिखाई देते हैं। इस प्रसंग में याद आता है कि क्या प्रेम का कोई लक्ष्य होता है?

नामवर सिंह ने अपनी किताब 'दूसरी परंपरा की खोज' में लिखा है कि प्रेम का कोई उद्देश्य नहीं होता वह स्वयं एक पुरुषार्थ है। बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य में राष्ट्र प्रेम, संस्कार, माता-पिता की भक्ति आज्ञा पालन, अनुशासन जैसे गुणों की खोज करने की जिद इन्हें कम से कम बाल साहित्य तो नहीं रहने देती। बंगाल में सुकुमार रॉय ने बच्चों के लिए जो नॉनसेंस लिखे वे आज भी बाल साहित्य में भारतीय पक्ष को शानदार बनाने वाले हैं। हिन्दी में ऐसा न हो पाने के कारण गहरे और जटिल हैं। यह समूचे हिन्दी मनोविज्ञान का मसला है जो एक पराजित आशय से ग्रस्त रहा। आखिर हम सवालों से घबराते क्यों हैं? बच्चों को अनुशासन में बांधने का मुख्य लक्ष्य क्या यह नहीं कि वे सवाल न करें। अच्छा है कि बाल साहित्य में वह पीढ़ी आ रही है जो सवालों से कतराती नहीं और जिसे यह भ्रम नहीं है कि इस साहित्य को पढ़वाकर हम नौनिहालों को भारत माता के श्री चरणों में समर्पित करवा देंगे। कहना चाहिए कि ये नए लेखक किसी उद्देश्य की तलाश नहीं करते और फिर भी किताबें वह कह देने में सक्षम दिखाई दे रही हैं जो कदाचित न कहा जा सका था।

इधर आई बच्चों की कुछ नई किताबों से ऐसी आशा की जा सकती है। रूम टू रीड, एकलव्य, भारत ज्ञान विज्ञान समिति और निजी प्रयासों से आ रही इन कुछ किताबों को ध्यान से देखा जाना जरूरी है क्योंकि इनका सफल होना बाल साहित्य के लिए सही रास्ता बनाएगा। रूम टू रीड ने पहले भी बच्चों के लिए कई बढ़िया किताबें तैयार की हैं। अभी आई नई किताबों में पहली है- 'हाथी और चींटी', प्रमोद पाठक की कहानी और राही कदम के चित्रों से बनी इस किताब में छोटी-सी कहानी है। बच्चों में (और बड़ों में भी) यह प्रवृत्ति होती है कि वे अपने में किसी न किसी विशिष्टता की तलाश करते हैं और ऐसी कोई विशिष्टता न मिलने पर अक्सर कुंठित होते हैं। कई बार यह जिद नुकसान करने वाली होती है लेकिन है तो क्या कीजिए? यहां प्रमोद मामूली-सी कथावस्तु के सहारे इस विशिष्टता बोध पर चोट करते हैं और वे अपने भीतर छिपे मामूली गुणों को ही ठीक से पहचानने की दिशा पाठकों को देते हैं। कहना न होगा कि संदेश गहरा है और अर्थ व्यापक। लोक शैली के चित्र कहानी को प्रभावी बनाते हैं।

प्रभात की कहानी और हर्षवर्धन कदम के चित्रों से बनी किताब 'नाच' भाषा के जादू बताती है। एक शब्द है - नाच। अब इससे कितनी और कैसी-कैसी अर्थ छवियां लेखक-चित्रकार ने मिलकर तैयार कर दी हैं। गांव का नाम-नाचना, नाच की खबर, मन नाचने लगा, गर्दन नाच रही थी, हाथ नाच रहे थे, आंखें नाच रही थीं और जब बिजली गई - अंधेरा नाचने लगा, हवा नाचने लगी। बड़ी कला यह नहीं है कि कोई कितनी बड़ी बात कहता है, बड़ी कला यह है कि मामूली दिखाई दे रही स्थिति और साधारण लग रही भाषा से भी नई और अलहदा बात कैसे की जा सकती है।

लेखक परिचय

लगभग एक दशक से हिन्दी साहित्य का अध्यापन, हिन्दी की लघु पत्रिका 'बनास जन' के संपादक। संप्रति : हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्राध्यापक हैं।

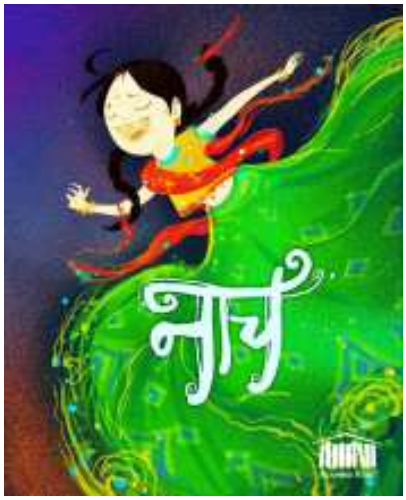

प्रकाशक : रूम टू रीड
201, ई(बी) दूसरा तल, डी-21,
कॉर्पोरेट पार्क, सेक्टर-21, द्वारका, नई दिल्ली-110075

राजस्थान के रेगिस्तान का जादू जैसे किताब में आ गया है। किताब पढ़ते हुए याद आता है कि गांवों के नामों में भी विविधता हो सकती है -दूधखेड़ी, आंवलहेड़ा से लगाकर गंज बासौदा तक। देखिए तो इधर कितने सारे शास्त्री नगर और वसंत कुंज हो गए? 'नाव में गांव' किताब में भी प्रभात की कहानी है जिसे अतनु रॉय के चित्रों के साथ पढ़ना है। किताब का बीज मंत्र है - नदी में नाव! नाव में गांव!! कहानी एक गांव की रोजमर्रा जिंदगी का चित्र बताती है। नाव में लोगों का चढ़ना-उतरना और जीवन का सहज गति से बढ़ते जाना। यह बहुत सामान्य प्रतीत होती है लेकिन देखने की बात यही है कि इस सामान्य में क्या है जो हम कभी देख नहीं पाते। इस सामान्य को देख सकने के लिए दोनों कलाकार (प्रभात और अतनु रॉय) जो उद्यम कर रहे हैं वह पाठकों को दृष्टि देता है। इसी किताब का जिक्र क्यों किया जाए? तुलसीदास ने जिस सरयू के चित्र खींचे हैं या केदारनाथ अग्रवाल ने जिस केन नदी का उल्लेख बार-बार कविताओं में किया है वे नदियां कोई आकाश गंगाएं नहीं थीं तथापि उनकी साधारणता हमें असाधारण लगती है तो इसका कारण कवि है, लेखक है। कहना न होगा प्रभात और अतनु रॉय यह काम कर सके हैं। इस किताब आकार डिमाई या सामान्य नहीं है बल्कि बहुत बड़ा है और शायद यह आकार भी कहता है कि ध्यान से देखो तो मामूली भी खास लगेगा।

एकलव्य के नए प्रकाशनों में तीन किताबें कुछ खास हैं। इंदु हरिकुमार की 'तीन दोस्त', अशोक हुसैन की 'सांप ने सोचा' और निकोलस बर्न की 'पतंग की करामात' शीर्षक की इन किताबों में विविधता भरी है। तीन दोस्त बताती है कि आपसदारी से ही संसार बढ़ता है-बनता है। इंदु हरिकुमार स्वयं डिजायनर हैं और कहानी उन्हीं ने लिखी है। फेब्रिक पेंट और कशीदाकारी से बनी इस किताब को पढ़कर पाठक नए कि अवधारणा ही नहीं जान पाते हैं अपितु बहुलता के सिद्धांत का मर्म भी बूझ सकते हैं। छठी में पढ़ रही कच्ची बस्ती की बच्ची बिंदिया पुरबिया ने अशोक हुसैन की कहानी के चित्र बनाए और किताब हुई -'सांप ने सोचा', सांप के मन की बात हम कहां जान पाते हैं लेकिन कहानी इस संभावना को साकार करती है और हमारे मन में भी सांप के लिए सोचने की जगह बना जाती है। पांचवीं की बालिका निकोलस बर्न की कहानी और सातवीं की प्रिया धुर्वे के चित्रों से बनी 'पतंग की करामात' में फैंटेसी है। पतंग चांद पर अटक गई और फिर क्या हुआ? भाई, वहां पहले ही दो आदमी फंसे थे, वे पतंग पर बैठकर नीचे आ गए। है न मजेदार बात।

प्रकाशक : भारत ज्ञान विज्ञान समिति
फ्लैट नं.-59/5, तृतीय मंजिल,
कालकाजी एक्टेंशन,
नई दिल्ली-110019

भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने बीते दिनों राजेश जोशी की एक किताब 'ब्रह्मराक्षस का नाई' और कनिका नायर की किताब 'पूछपाछ का खेल' का प्रकाशन किया है। राजेश जोशी की किताब में बंगाल की एक लोककथा का आधार बनाकर नाटक लिखा गया है जो एक सामान्य पेशे वाले व्यक्ति (नाई) की चतुराई की बात कहता है। इस लोककथा में बुद्धि के कौशल के साथ विपरीत हालत में भी हिम्मत न हारने की बात आती है। राजेश जोशी कभी गीतों तो कभी बहुप्रचलित अंग्रेजी शब्दों से इसे रोचक बनाते हैं। कनिका नायर की किताब 'पूछपाछ का खेल' हमारे सौर मंडल के बारे में रोचक और आवश्यक जानकारियां देती है। चांद की धरती से दूरी जैसे सवाल हों या रॉकेट के चलने के सवाल। कनिका के चित्र और तथ्यों की रोचक प्रस्तुति इनमें दिलचस्पी पैदा करती है।

प्रभात और उनके चित्रकार-डिजाइनर मित्र शिवकुमार गांधी ने मिलकर एक किताब तैयार की है -भोर! सुबह का आना कैसा होता है। कैसे भोर सारे संसार को जगाती है? ओस कैसे उसकी मदद करती है? फसल उनसे क्या कहती है? हवा उनके काम को कैसे आसान बनाती है? प्रकृति क्या करती है और मनुष्य जीवन से उसके क्या संबंध हैं -यह सब इन छोटी-छोटी बातों में आ गया है। नई जीवन सभ्यता मनुष्य और प्रकृति में दूरी को बढ़ा रही है। बच्चे क्या बहुत से बड़े भी नहीं जानते कि रबी और खरीफ में क्या अन्तर है तब 'भोर' जैसी किताबें हमें जरूरी जगहों पर जाने के लिए सोचने को मजबूर करती हैं।

जहां रूम टू रीड और एकलव्य की किताबें नख-शिख तक त्रुटि मुक्त हैं वहीं भारत ज्ञान विज्ञान समिति की किताबों में वर्तनी की अशुद्धियां अखरने वाली हैं। 'भोर' व्यक्तिगत प्रयासों से आई है लेकिन यहां का गहरा काला रंग और थोड़े लम्बे गद्यांश परेशान करते हैं। रूम टू रीड को अब सामान्य पाठकों तक भी किताब पहुंचाने के बारे में सोचना चाहिए।

ध्यान से देखा जाए तो इन किताबों मे बाल साहित्य कि आदर्शीकृत सामान्य धारणाएं टूटती दिखती हैं और इनका नए विषयों की तलाश में दिखाई देना भी सचमुच आश्वस्ति देता है। ◆